बौद्ध धर्म

[12th lecture]

BA PART-I
PAPER-I

- Mamta Rani
(History Depart.)
SNSRKS. COLLEGE
SAHARSA.

Scanned with CamScanner

बौद्ध धर्म

संस्थापक - गौतम बुद्ध
जन्म - 563 ईसा पूर्व
जन्म स्थान - लुम्बिनी
पिता का नाम - शुद्धोधन
माँ का नाम - महामाया
सौतेली माँ का नाम - प्रजापति गौतमी
बचपन का नाम - सिद्धार्थ
पत्नी का नाम - यशोधरा
पुत्र का नाम - राहुल
सौतेले भाई का नाम - देवदत्त
घोड़े का नाम - कंथा
वर्ण - क्षत्रिय
कुल - शाक्य
सारथी - चाण्ण
प्रिय घोड़े का नाम - कंथक

→ भगवान बुद्ध ने निम्नलिखित 4 दृश्यों को देख-कर घर का त्याग कर दिया था -

(a) वृद्ध व्यक्ति को देखना।
(b) रोगी व्यक्ति को देखना
(c) मृत शरीर को श्मशान घाट ले जाते हुए देखना।
(d) सन्यासी को देखना।

सन्यासी के जीवन से प्रभावित होकर सिद्धार्थ 29 वर्ष की आयु में बिना किसी को बताए घर का त्याग कर दिया।

- भगवान बुद्ध के गृह त्याग को महाभिनिष्क्रमण कहा गया है।
- वैशाली के आलार कलाम के आश्रम पर पहुँचे और आलार कलाम के सांख्य दर्शन के बारे में ज्ञान प्राप्त किया। इस प्रकार आलार कलाम इनके प्रथम गुरु थे।

Scanned with CamScanner

मन को शाँति नही मिलने पर इन्होंने राजगीर/राजगृह जाने का फैसला किया जहाँ पर उद्रक रामपुत्र जैसे विद्वान रहते थे। यहा भी ज्ञान की प्राप्ति नही हुई तब यह गया चले गये।

→ गया मे निरंजना नदी के किनारे पीपल वृक्ष के नीचे 35 वर्ष की अवस्था मे इनको सम्बोधि (ज्ञान) की प्राप्ति हुई और सिद्धार्थ, बुद्ध कहलाए। गया बोध-गया के नाम से और वह वृक्ष, बोधिवृक्ष के नाम से आज भी प्रसिद्ध है।

→ इन्होंने सर्वप्रथम सारनाथ मे अपना प्रथम उपदेश उपदेश 5 भिक्षुओ को दिया।

→ प्रथम उपदेश को धर्मचक्रप्रवर्तन कहा गया है।

→ भगवान बुद्ध ने 80 वर्ष की अवस्था में तक अपने धर्म का प्रचार-प्रसार किया। अंतिम समय मे UP के कुशीनगर मे पहुँच गए। इसी स्थान पर चुन्द नामक लोहार के यहाँ सुअर का माँस खाने के बाद उदर विकार के चलते शाल वृक्ष के नीचे 483 ई०पू० में मृत्यु को प्राप्त हुए जिसे महापरिनिर्वाण कहा गया है।

– भगवान बुद्ध का अंतिम वाक्य –

"सभी धर्म अपूर्ण है, निर्वाण या मोक्ष के लिए प्रयत्न करो।"

– भगवान बुद्ध ने जिन पाँच भिक्षुओ को उपदेश दिया, वे निम्नलिखित है –

वप्प, महानामा, कौडिन्य, भद्दिय, अश्वजीत।

– सिद्धांत –

(a) चार आर्य सत्य :–

(i) दुख (ii) दुख समुदय (iii) दुख निरोध (iv) दुखनिरोध गामिनी प्रतिपदा।

(b) अष्टांगिक मार्ग :-

भगवान बुद्ध के अनुसार दुख दुख निरोध की तरफ जाने वाले मार्ग की संख्या 8 है। इसलिए इस मार्ग को अष्टांगिक मार्ग कहा जाता है।

सम्यक दृष्टि	सम्यक आजीविका	सम्यकस्मृति
सम्यक संकल्प	सम्यक व्यायाम	सम्यक समाधि।
सम्यक वाक्य	सम्यक कर्म	

(c) दसशील → इस धर्म में दसशीलको प्रतिपादित किया गया था -

- सत्य
- अहिंसा
- अपरिग्रह
- अस्तेय
- ब्रह्मचर्य
- मदिरा निषेध
- विकाल भोजन नहींकरना।
- कोमल सैय्या का त्याग
- सुगंधित पदार्थों का त्याग
- नृत्य संगीत का त्याग।

→ दसशील उन बौद्ध भिक्षुओं के लिए बनाया गया जो सन्यासी जीवन बीताते थे। गृहस्थ जीवन मे रहकर जो इस धर्म का पालन करते थे, उनको पंचशील का ही पालन करना होताथा।

(d) प्रतीत्य समुत्पाद :- यह बौद्ध धर्म का दर्शन है। जो जन्म से लेकर मृत्यु तक 12 भागो मे विभाजित है। इसका शाब्दिक अर्थ होता है किसी भी एक वस्तु के होने से दूसरे का जन्म होता है। और इनके बीच एक भी क्षण का विलंब नहीं होता है।

(e) त्रिरत्न :- बौद्ध धर्म में त्रिरत्न की स्थापना किया गया है - बुद्ध, धम्म, संघ।

Scanned with CamScanner

(8) **विकास** :- बौद्ध धर्म के विकास में शासक बौद्ध संगीति तथा आम लोगो की महत्वपूर्ण भूमिका थी। अजातशत्रु, कालाशोक, अशोक, पाल वंश के शासक कनिष्क और सबसे बड़ा व्यापारी अनाथपिण्डक ने अधिक सहयोग किया था।

⇒ **प्रथम बौद्ध संगीति** :-

काल - 483 ई०पू०	यह संगीति राजगीर के सप्तपर्णी गुफा मे आयोजित किया गया था जिसका मुख्य उद्देश्य भगवान बुद्ध के मौखिक उपदेशों को ग्रंथ के रूप मे संग्रहित करना।
स्थान - राजगीर	
शासक - अजातशत्रु	
अध्यक्ष - महाकश्यप	

- इस संगीति में आनंद के नेतृत्व मे सुत्तपिटक और उपाली के नेतृत्व मे विनयपिटक की रचना किया गया।

⇒ **द्वितीय बौद्ध संगीति** (383 ई० पूर्व) :-

स्थान - वैशाली
अध्यक्ष - साबकमीर
शासक - कालाशोक

- इस संगीति मे बौद्ध धर्म मे पहली बार विभाजन हुआ और स्थिरवादी/थेरवादी तथा महासंघिक नामक बौद्ध सम्प्रदाय का उदय हुआ। जिसमे थेरवादी प्राचीन परंपरा को और महासंघिक नई विचारधाराओं को मानता था।
- इस संगीति को सप्तशतिका कहा गया है।

⇒ **तृतीय बौद्ध संगीति** (251 ई० पूर्व)

स्थान - पाटलिपुत्र
शासक - अशोक
अध्यक्ष - मोगलीपुत्ततिस्स

Scanned with CamScanner

⇒ चौथी बौद्ध संगीति (प्रथम सदी)
स्थान - कुण्डलवन (कश्मीर)
शासक - कनिष्क
अध्यक्ष - वसुमित्र
उपाध्यक्ष - अश्वघोष

- इस संगीति में महायान और हीनयान संप्रदाय का जन्म हुआ। हीनयान का भी विभाजन सौत्रान्तिक और वैभाषिक के रूप में विभाजन हो गया। महायान का विभाजन भी दो भागों में हुआ। शून्यवाद (माध्यमिक) और विज्ञानवाद (योगाचार) में हो गया।
- शून्यवाद के प्रवर्तक नागार्जुन थे।
- विज्ञानवाद के प्रवर्तक मैत्रेयनाथ थे।

⇒ पाँचवी संगीति (643 ई०)
स्थान - कन्नौज
शासक - हर्षवर्द्धन
अध्यक्ष - ह्वेनसांग।
- सातवीं सदी में वज्रयान नामक नई शाखा का जन्म हुआ, जिसमें जादू-टोना, अंधविश्वास, मूर्तिपूजा, भ्रष्टाचार अर्थात् सभी प्रकार की बुराईयों का समावेश हो गया परिणामस्वरूप बौद्ध धर्म के पतन में सबसे अधिक योगदान वज्रयान शाखा का है।

Scanned with CamScanner